।। श्री गुरुदेव प्रसन्न ।।

★ श्री जैरामदास उर्फ लहरीबाबा लिखि ★

सत्संग परमार्थ आवृत्ती

हिन्दी भजने

किमत : ८–५० रु.

॥ श्री गुरुदेव प्रसन्न ॥

★ श्री जैरामदास उर्फ लहरीबाबा लिखित ★

सत्संग परमार्थ आवृत्ती

हिन्दी भजने

किमत : ८–५० रु.

प्रकाशक :

श्री संत जैरामदास उर्फ लहरी महाराज

प्रबंधक :

लहरी आश्रम

मु. पो. कामठा

ता. गोंदिया, जि. भंडारा (महाराष्ट्र)

प्रथम आवृत्ती : १०००

सर्वाधिकार प्रकाशक के स्वाधीन

पुस्तक मिलने का स्थान –

श्री संत जैरामदास उर्फ लहरी महाराज

लहरी आश्रम, मु. पो. कामठा,

ता. गोंदिया जि. भंडारा (महाराष्ट्र)

मुद्रक :

दिपक कृष्णाजी भागवत

भागवत प्रिंटींग प्रेस,

टी. हाऊस चौक, मेन रोड, भिवापूर

जि. नागपूर ४४१२०१

श्री संत जैरामदास उर्फ लहरीबाबा
कामठा

आश्रम : कामठा

त. गोंदिया जि. भंडारा (महाराष्ट्र)

जन्म तारीख

७-१२-१९२२

— संदेश —

जैसा जैंसा समय बदलता है वैसे वैंसे हमारे आचार, व्यवहार और बुद्धी बदलती है। उसी प्रकार सृष्टिचक्र भी बदलता है। समय सूचक ज्ञान का संदेश महापुरुषही मुमुक्ष जीव को दर्शाते रहते है। वे जीव के कल्याणार्थ और अुनका जीवन सफल करने के लिये रात-दिन अपना शरिर घिसते रहते है। समाज हित के लिए वे इस पृथ्वीपर अवतार लेकर आते है तथा उसिमे अपना जीवन समर्पित करते है। साथही देश के उन्नती के ओर उनका ध्यान आकर्षित रहता है। संत यही समाज के आधारस्तंभ है। इसको टिकाये रखना यही हमारा धर्म और कर्म है। इसके लिये मैंने कुछ तूटी-फूटी भाषामे समाज के उत्थान के लिये भजन, प्रवचन के माध्यम से अपने विचार प्रदर्षीत किये है। विचार सरिता से ज्ञान सरिता एवम् ज्ञान सरितासे विवेक सरिता जागृत होती है। जीससे सरलतासे सफलता प्राप्त कर सकते है।

मेरे विचारोंको ग्रहण कर तद्नुसार अमल करेंगे तो निश्चित ही माया से आप सफलता प्राप्त करने मे कामयाब हो सकते है ऐसा मुझे विश्वास है।

संत जैरामदास

अनुक्रमाणिका

भ. नं.	भजन	पृष्ठ नं.
१	रिस्ता तेरा जन्म	१
२	श्रम करके जियो	२
३	मैंने देखा एक ही देवता	३
४	काम करो और भोजन पाओ	३
५	दिलदार है मेरा साथी	४
६	मेरा देश ये अहिंसा	५
७	ईमानदार होये चाहे गरीब	६
८	मानवता के कर्मों से बनते	७
९	गरीबोंकी मेहनत एक दीन	८
१०	जब तक न होवे मन की पूजा	८
११	सब मे जो हित की बाते	९
१२	जिसको न अपने शब्द का	१०
१३	मुल स्भाव बदलानेसे	११
१४	अटल सिद्धांती सत्य पर	१२
१५	जिसनें परखा ना गलती	१३
१६	प्रभु के पास तेरी वकीली	१४
१७	तेरी सुकर्मों से भरी किर्ती	१४
१८	मित्र वही ईमानदार	१५
१९	दो दीन की है जिंदगानी	१६
२०	आशा रखे जो बाप कमाई	१७
२१	इंसान को है हर वस्तू की गरज	१८
२२	सच्चे को तो बिरले साथी	१९
२३	करते रहो वक्त का इंतजार	२०
२४	इंसान के पास है इंसाफ	२१
२५	धरती टिकी है धर्म के	२१

भ. क्र.	भजन	पृष्ठ नं.
२६	हो कितना गरीब ईमानदार	२२
२७	वक्त है हाथ मे तेरे	२३
२८	दुखियो को पुछो उनके दिल	२४
२९	हरदम ही मन मे आये	२५
३०	गुरु से लगी लगन	२५
३१	भरोसा है प्रभू तेरा	२६
३२	तडफकर जन पुकार रहे	२७
३३	बढा है गुंडो का बाजार	२८
३४	मन तू लगा सुरत का तार	२९
३५	जिसके सुख दु:ख वो ही जाने	२९
३६	सदा दिल मे सोचे अपनी भलाई	३०
३७	आगे कदम सबको बढाना	३१
३८	जब तलक रहेगा प्राण	३२
३९	जब पीर पराई नही जाने	३३
४०	प्यारे भुलारे हरीका नाम	३३
४१	किसी सज्जन ने अपने घरका	३४
४२	उँचे बिचार नही उँचा कैसा	३५
४३	साथ हमारे धर्म निती है	३५
४४	देखी है हमने सत्य की बानी	३६
४५	सत्य पे चलना आसान नहीं	३७
४६	ये अखीयाँ प्यासी दर्शन को	३८
४७	आत्मा के लहरो मे छूपा	३८
४८	जैसा मुझे आदमी मिले	३९
४९	हो गरीब पर ईमानदार	४०
५०	हम धर्मं नही बेचेंगे	४०
५१	जिना और मरना यही देह	४१

भ. क्र.	भजन	पृष्ठ क्र.
५२	प्रकृती को देखकर करते	४२
५३	नैनो का तारा जिवन का	४३
५४	मुझे प्यारा किसान मेरा	४३
५५	सबका भला जो चाहता	४४
५६	इन्सानियत की करे पुजा	४४
५७	जो हो गया है ब्रंम्हमय	४५
५८	जहा वहा पिया का बासा	४६
५९	समय का इंतजार करते चले	४६
६०	जो कुछ भी है अपने को	४७
६१	ये है संतोकी बानी	४८
६२	वो छलीया कब तक चलेगा	४८
६३	तेरे मेरे नाते युग युग के	४९
६४	आज दुनिया मे मानव ने	५०
६५	जो राम का बन गया	५०
६६	सुनो भैया संतोकी सतगुण	५१
६७	आज अलालीसे बढी महंगाई	५१
६८	पहले अपने दिलको टटोले	५२
६९	श्रद्धा भाव दुढ जिसके	५३
७०	अलालीसे किया परीवार का	५३
७१	तेरी लगन हो भजन गाने मे	५४
७२	निष्काम कर्म मे ओ करता काम	५५
७३	ये मनके मन चले	५५
७४	गरीबोकी दया देखी न जाये	५६
७५	दर्द को मेरे कोई न जाणें	५६
७६	जिसने देना ही देना सीखा	५७
७७	जो गरीबोकी सुने पुकार	५८
७८	भाविक पिढी हो संतकर्मो की	५९

भ. नं.	भजन	पृष्ठ नं.
७९	वास्ता मेरा ना किसी के	५९
८०	मानव की भ्रष्ट हुआी मती	६०
८१	हम घरवासी सन्यासी	६१
८२	सत के बिना सुना जिवन	६२
८३	पाया हिरा हो पाया हिरा	६२
८४	संत ईशारे हो संत ईशारे	६३
८५	पानी दुधभाव मे बिक जाये	६४
८६	कौडी कौडी धन जोडके रखा	६५
८७	हृदय परिवर्तन दया धरमसे	६६
८८	दु:खियो के हितकारी है	६७
८९	उल्टे नजर से देखले	६७
९०	दिन बिताये रात आयी	६८
९१	न्याय रोवे गुड बजरियामे	६९
९२	छुटा बाण वापस ना आय	६९
९३	मेरो धीरज एक साँवरिया	७०
९४	दिल मे नही शांती जिसके	७१
९५	तुम भटको मंदिर मज्जिद	७१
९६	जिसके दिल मे निती होती	७२
९७	फकीरी लगती मुझको प्यारी	७३
९८	अरे भविष्य जिसका उजला नही	७३
९९	सन्तो का ये धरम नही	७४
१००	कई लोग बताते चतूराई	७४
१०१	मेरे दुर्बुद्धी के भाव कैसे	७५
१०२	गुरु नाम का हमने ध्यान किया	७६
१०३	संसार सभी दु:ख दाई	७७
१०४	रंग जा रे तू रखना हरी के नाम	७७
१०५	कई लोग पढते रामायण गीता	७८

भ. नं.	भजन	पृष्ठ नं.
१०६	ललचाये ये रसना हरी गुण	७८
१०७	भजन बिना रसना सुनी	७९
१०८	जगत कल्याण के लिए	७९
१०९	हाय हाय ये मजबूर	८०
११०	गुरुकृपा कही खरीदी ना जाती	८१

भजन क्र. १

[तर्ज – रिस्ता ये तेरा है सबसे याला]

रिस्ता तेरा जन्म, जन्म से चला
तुझ बीन मेरा कोई ना रखवाला
तू मेरा राजा ऽऽऽ मैं तेरी प्रजा ॥ टेक ॥
तुझ बीन मेरा ......

एक ही वस्तु आकार निराकार
जड चेचन में है एक ही सार
समझे उसकी नैया, होती है पार
जीव शीव का यही, है चमत्कार
है सबसे न्यारा ऽऽऽ है सबमें भरा
बिरले ने समझी ये तेरी कला ॥ १ ॥
तुझ बिन मेरा ......

खुद में खुदा को है, जिसने परखा
उसके जैसा न है, त्रिलोक में सखा
वही स्वरुप है, ज्योती स्वरुप का
यही तो फर्क है, सिद्ध् बद्धताका
न कोई गुरु चेला ऽऽऽ भ्रम उसका टला
रहे वो जगमें है, जग से निराला ॥ २ ॥
तुझ बीन मेरा ......

यही तो है खेंल, माया जगत का
रोग लगा है, जन्म मरण का
अंतर दृष्टी से, है जिसने निरखा
सियाराम को, विश्व में देखा
तू ही कर्ता धर्ता ऽऽऽ नरनारायण बना
सतसंग से तू, छुडाले रे बला ॥ ३ ॥
तुझ बिन मेरा......

जैरामदास कहे, मिटे कमतरता
संपूर्ण हो गया, तू गुरुदेवता
तु ही मतवाला ऽऽऽ खुद का खुद ही सला
तु ही तो है मोहन मुरलीवाला ॥ ४ ॥
तुझ बीन मेरा ......

भजन क्र. २

[तर्ज– कर चले हम फि ा]

श्रम करके जियो तुम मेरे भाईयों
यही है प्रगती देश की भाइयो ॥ टेक ॥

कर्मं को वे परखना ना, सीखे कभी,
कैसा होगा तुम्हारा ये जीवन सुखी ।
अपने कर्मं को तुम देखे न हो कभी,
फिर कैसे मिले सुख शांती तभी ।
भुल रहे मर्मं अब तुम भाइयों ॥ १ ॥ श्रम

सच्ची राहों से होता है भाग्य उदय,
तभी मिले तुम्हे हरियाली जिवन में ।
चारो और लहराये, आनंद की लहरे,
दिन तुम्हारे बदल जायेंगे ये बुरे ॥ २ ॥ श्रम

साथी हम ही हमारे है, इस दुनिया में,
घाती हम ही हमारे है इस दुनिया में ।
जिम्मेदारी निभाना अपनी आपको,
बुराई न किसी की अब तुम देखो ।
अपनी गलतियाँ देखो भाईयों ॥ ३ ॥ श्रम

कहता जैराम कर्म भूमी नाम इसका,
फर्ज अपना निभाना ये धर्म सबका ।
देखकर चलो तुम अपनी मानवता को,
तभी पाओगे तुम परमधाम को,
संत वचनों को तूम भूला न भाईयो ॥ ४ ॥ श्रम

भजन क्र. ३

[तर्ज– मै रंगा बसंती चोला]

मैने देखा ऐक ही देवता - २ - हो यारो
इजा न नजर आता ......मैंने ...... ॥ टेक ॥
दिव्य दृष्टी से परखा मैंने, एक ही मै हुँ द्रष्टा
मिटाई गुरुने मेरी भ्रमता, बनाया ब्रम्ह वक्ता
चारो खानी में था मैं लटका, जीव दशा में रहा भोगता
॥ १ ॥
अण्डज, पीण्डज, उद्बीज, जारज, घुमा जन्म मरण के फेरे
माया ममता से भूल पडी थी मैं कौन पहिचाना
मेरा शिवस्वरुप दिखाया, आपसम बनाया फरिस्ता ॥ २ ॥
विश्व ढूंढा मेरा मैं ही, ऐसी जगह न देखी कही
कण–कण मे है मेरा वासा, दिलदार दिल का दिलासा
करता धरता एक ही वस्तु, भदी जाने भेदका निष्टा ॥ ३ ॥
जैरामदास कहे बूंद को परखा, उसमे भेद है छूपा
परखे बिन नर है कंगाल, व्यर्थ ही बजाता गाल
परमहंस गति जिसने पाया, भोगे उन्मत अवस्था ॥ ४ ॥

भजन क्र. ४

[तर्ज– स्वतंत्र]

काम करो और भोजन पाओ, यही मानवताका मर्म
फूकट किसी का न खाओ, तुम इंन्सानियत का धर्म ॥ टेक ॥

समझके चल अपनी जिम्मेदारी, जिसमें भरी है इमानदारी
बेईमानी का रखो डर, समझा नही वो, है बेशरम
इंन्सानियत का यही धर्म ॥ १ ॥

अपना प्रपंच जिसने नही साधा, उसके परमार्थ में
पडा है बाधा – , है व्यवहार उसका गंदा
उसकी बुद्धी, में है भ्रम ॥ २ ॥

बाते करता ज्ञान ध्यान की, पेट की न उसे फिकर
पर कमाई पे रखे भरोसा, कैसी जिंदगी है मगर .
परखा नही मानव मर्म ॥ ३ ॥

जैरामदास कहे ऐसे नर, पशुओं से भी है ये निपट्टर
लिया जनम धरती पर बोझा
करता है वो कुकरम ॥ ४ ॥

भजन क्र. ५

[तर्ज दिल ही दिल में ले लिया दिल]

दिलदार है मेरा साथी, उसकी बाते मुझे पटती
उससे ही मेरी दोस्ती, हर दम उसकी याद आती ॥ टेक ॥

है भरोसा उसकी जुबां पर, हुँ कुर्बा उनकी नीतिपर
दुनिया में न किसी का है डर, साथ दिया जिसने समय पर
वो ही तो है मेरा ईश्वर -२, वो ही मेरी जिवन ज्योती ॥ १ ॥

सत्कर्मों की दिखाई राहै, वो ही दिलको मेरे भाये
वो ही मेरे दिल का दिलासा, उस पे ही सच्ची निष्ठा
मेरी हिम्मत है रे उसपर -२, ये ही मेरी उन्नती ॥ २ ॥

एक में ही अनेको देखा, दूजा कोई ना दिखा
प्रपंच परमार्थं एक सामान, निज स्वरुप की किया पहिचान
हो गया उससे ही प्यार -२ यही मेरी सच्ची भक्ती ॥ ३ ॥

जैरामदास कहे दृढ निश्चय, जिसके बलपे हुआ निर्भय
छोडे न कभी उसके चरण, चाहे संकट आये मरण
उसके पग पर मेरा माथा –२, दिया जिसने मुझे मुक्ती ॥ ४ ॥

भजन क्र. ६

(तर्ज– मेरे देश में पवन)

मेरा देश ये अहिंसा का धर्म सिखाये –२
मानवता से जीना, सबको ये ही दर्शाये ॥ टेक ॥ मेरा देश ये

सभी धर्म का सभी मजहब का
भाइचारे का नाता जताये हो
प्यार देना और प्यार लेना
यही यहाँ की है निती हो
रामायण और गीता, यही सबको सुनाये ॥ १ ॥ मेरा देश ये

हिलमील करके सबको चलना
बंधुत्व प्रेम जगाना हो
किसी का कोई फूकट न खाना
श्रमकर जीना और मरना हो
संकट समय मे एक दुजे के, सदा हाथ बटाये ॥ २ ॥ मेरा देश ये

सती संतोकी राहो पें चलकर
जीवन सफल बनाये अपना हो
सत्यता से इसकी प्रीती
आत्मज्ञान ही इनकी उन्नती हो
निष्काम कर्म कर के, इसमें आनंद मनाये ॥ ३ ॥ मेरा देश ये

पक्षपाती न किसी जाती से
एक आत्मा के रुप अनेक हो
इसे परखकर द्वेष मिटाना
समता का ज्ञान सिखाना हो
एक दुजे से करे मिताई, कैसी राह दिखाये ॥ ४ ॥ मेरा देश ये

जेरामदास कहे भुले भटके
सच्ची राहो पर लाये हो
पतितों को पावन करना
भव बंधन से छुडाये हो
विश्व शांति का मंत्र देकर, अज्ञानता मिटाये ॥ ५ ॥ मेरा देश ये

भजन क्र. ७

(तर्ज– मोहब्बत की है तुम्हारे)

इमानदार होये चाहे गरीब हो
वही तो है देश का कर्णधार
इंन्सानियत से सबका करे सत्कार ॥ टेक ॥ वही

देश धरम का है उसका नारा
सेवकाई का देवे इशारा
स्वतंत्रता का धर्म हमारा –२
दुश्मनो को देवे फटकार ॥ १ ॥ वही

श्रम करके जीना यही उसका गाना
बुरे कर्मो से दूर रहना उसका निसाना
अज्ञानी को हरदम जगाना –२
यही उसका है अधिकार ॥ २ ॥ वही

झुठे बातोंकी उसको नाराजी
लोफर गुंडे और पाजी
हरदम उडाता है उनकी धज्जी --२
सदा करते है उनसे तकरार ॥ ३ ॥ वही

जैराम कहे सच्चा इंन्सान
देश के लिए होता बलिदान
यही उसकी है असली शान --२
समाज का है वही सरदार ॥ ४ ॥ वही

भजन क्र. ८

[तर्ज-- स्वतंत्र]

मानवता के कर्मो से बनते है इंसान
श्रम की कमाई में छुपे है भगवान ॥ टेक ॥

परखे ईमान से जो अपनी भलाई
सभी जीवों सें करे मिलाई
अलाली में रहकर करे खुद का नुकसान ॥ १ ॥

झुठ मुठ का करे व्यवहार
सत्य असत्य का परखा न सार
मानव रहकर भी बना रे शैतान ॥ २ ॥

ज्ञान बुद्धी विवेक से न किया पहिचान
कही भी न मिलती उसे शांती समाधान
इहलोक से सदा उसे मिले अपमान ॥ ३ ॥

जैंराम कहे जगत मे वही यम का मेहमान
इहलोक परलोक में न मिले सन्मान
दुष्कर्मीयोंका कोई न लेते नाम ॥ ४ ॥

भजन क्र. ९

(तर्ज– स्वतंत्र)

गरीबो की मेहनत एक दीन रंग दिखायेंगी
दलालों को सबक सिखायेगी ॥ टेक ॥

वो दिन सुनो अब नही है दूर
काम बनने में देर लगती है
छुपाने से न सच्चाई छुपती है
एक दीन मंजूर होती है
अज्ञानी को ज्ञानी बनायेगी ॥ १ ॥

कर्मं मे छुपा है धर्म का मर्मं
परधन पर पलने वालो, छोडो भ्रम
मानवता में भलाई तुम्हारी
व्यर्थं खो रहे उमर सारी
सीखो ईमान से जीना, सुख शांती मिल जायेगी ॥ २ ॥

बलबुतेपर जो जियेगा, सतयुगी कहलायेंगा
तन छुटनेपर किर्ती छोड जायेगा
जीवन कथा बनायेगा ॥ ३ ॥

जैराम कहे जोडो नीति से प्रीति
उसमे ही सच्ची मिलेगी सद्‌गती
मन में समता भाव बनाओ
दीपक प्रेम का अब तो जलाओ
यादगारी रह जायेगी ॥ ४ ॥

भजन क्र. १०

[तर्ज– रिस्ता ये तेरा है सबसे न्यारा]

जब तक न होवे ये मन की पूजा
किसी छुटती जन्म मरण की सजा ॥ टेक ॥

धनी ज्ञानी हो चाहे कितना बलधारी
ध्यान करे पर मिटे न मन की गद्दारी
गुरुदेव न करे उसपर रजा ॥ १ ॥

दृढता से होये मन की तैयारी
वोही सज्जन है और सुखकारी
आत्मज्ञान का वो ही है राजा ॥ २ ॥

सर्व शक्ती का पति गणराज
तीनो भुवन में है उसका राज
जग में उसके जैसा ज्ञानी न दूजा ॥ ३ ॥

माता जिनकी पार्वती, पिता महादेव
भक्त करते सेवा, सायें रहते गुरुदेव
मिटती है उनकी सारी कजा ॥ ४ ॥

कहे जैराम जिसने, है मन को साधा
किसी बात की न पडी बाधा
पतित भी तो बनता है राजा ॥ ५ ॥

भजन क्र. ११

[तर्ज– अपनी भी जिंदगी में खुशियों को पल

सबमें जो हित की बाते, समझ चलते जायेगा
भलाई का फल पायेगा ॥ टेक ॥

छोड ब्रराई को सही मार्ग अपनायेगा
सबको भाये वैसा कार्य करता रहेगा –२
जगत में बोल बाला रह जायेगा
ईश्वर के भजन से, भव से तर जायेगा ॥ १ ॥

नर अच्छी करनी से नारायण बनता
जब मिट जाये उसकी विषमता
मन की भावना उज्वल बनाता
बुरे कर्म न उसको छुने पायेगा ॥ २ ॥

सज्जन, सज्जनतासे ही करे प्यार
झुठी बातकी सदा करे तकरार
भाई चारे का उसका व्यवहार
आप तर मे दुनिया को तरायेगा ॥ ३ ॥

कहता जैराम अपना बनाया इतिहास
क्यों करे वो पराई आस
खुद में देखा खुदा का वासा
सबकी जुबाँपर उसका ही नाम आयेगा ॥ ४ ॥

भजन क्र. १२

(तर्ज– स्वतंत्र)

जिसको न अपने शद्ब का विश्वास
मानव तन का किया है नाश
दरदर की खाता ठोकरे अपना न कभी किया विकास ॥ टेक ॥

बेईमानी की जिसकी भाषा
कोई न करते इसकी आशा
देवे हरदम किसी को झासा
बैठो न कोई इसके पास ॥ १ ॥

इनको न समझो भाई भतीजा
धोका देंगे मिलेगा बुरा नतीजा
परखकर इनसे दूर रहते जा
संगत से होगा तुम्हे त्रास ॥ २ ॥

जैरामदास कहे ऐंसे गंदे
झूठ मूठ के करते धंदे
दुनिया में कितने मिलते गधे
इनके संगत में खोवे न श्वास ॥ ३ ॥

भजन क्र. १३

(तर्ज– लोग बरसो जुदा)

मूल स्वभाव बदलाने से न बदलते
चाहे दुष्ट कितनी भी चाले चले
उसके गुणदोष कोई न मिटा सके ॥ टेक ॥

सत्‌गुणी हो या हो दुर्गुणी
छली हो या हो वो क्रोधी
कोशीश कितनी क़रे छुटने से न छुटे
जिसमें दया धरमं हो वो कभी न मिटे ॥ १ ॥

जैंसा करेला कडवा होता है
मिठा डालनेसे मीठा न बनता है
दुर्जन सज्जन एक न मिलते है
पापी का मन कभी न हो उजले ॥ २ ॥

उज्वल मन का, रहे जो मानव
छल कपटी सैताये दानव
काक कोकिल लगते है एक समान
ज्ञानी उनकी बानी को ना भुले ॥ ३ ॥

दयावान धर्म विमुख न होता
प्राण चाहे उसका कोई हरता
जैरामदास कहे, कभी डग मग न डोले
अमर बानी न उनकी कभी ढले ॥ ४॥

भजन क्र. १४

(तर्ज– लोग बरसो जुदा)

अटल सिद्धांती सत्य पर रखता भरोसा
पराये धन की कभी रखता न आशा
सत्कर्म की है उसकी भाषा ॥ टेक ॥

अपनी मेहनत की रोटी लगती है मीठी
चाहे कोई कितना देवे घी रोटी
मन कभी न भरे ऐसा है हट्टी
मिटे न उसके मन की मनसा ॥ १ ॥

साथी होते है स्वयं के विचार
अपना ही करता रहता है प्रचार
निकाले सत्य असत्य का सार
उसमें ही अपना मिटाये दिलासा ॥ २ ॥

नीत नूतन भाषा संतो की समझे
मिद्वानो जिसको तुम परख लिजे
सत्संग उनकी तुम कीजिए
समझने की कोंशीश करे न हो निरासा ॥ ३ ॥

जैरामदास कहे आत्मज्ञानी
आत्मज्ञान की चलाये बानी
मुढ न समझे उनकी रहनी सहनी
परब्रम्ह ही उसको सुहाता ॥ ४ ॥

भजन क्र. १५

(तर्ज– जब प्यार किया तो डरना क्या)

जिसने परखा ना ' अपनी ' गलती
पापी में है उसकी गिनती
कही भी ना मिलें उसे शांति ॥ टेक ॥

ज्ञानी हो या हो कोई धनी
मानवता की नही है करनी
अपने हाथ से ही करता हानी
दूष्ट भरी है मती ॥ १ ॥

पाप करम को छुपाकर रखे
जैसा मन में आया वैसा बके
जग को दिखाये अपनी होशियारी
बुरी है उसकी निती ॥ २ ॥

झुठी चाले, कब तक चलेगी
एक दीन उसकी, पोल खुलेगी
तेरी करनी तुझको ही खायेगी
कोई ना मिलेगा साथी ॥ ३ ॥

जैरामदास कहे, करनी का फल
प्रभु ना करे उसका हल
बुरे कर्म को देखकर चल
अंत में होगी दुर्गती ॥ ४

भजन क्र. १६

[तर्ज–   ]

प्रभू के पास, तेरी ये वकीली न चलेगी
जैसी करनी, वैसी ही सजा तुझको मिलेगी
याद रख कभी भी ये न टलेगी ।। टेक ।।

झूठ मूठ के कार्यो मे करता है मजा
दिन दुखी को तू लूट बना ज्ञानी राजा
शोषण से करता है पोषण, एक दीन पोल खुलेगी ।। १ ।।

इन्सान के पास अंधेर नही है
इन्साफ का दरबार खुला रहता है
गद्दारी को सजा दिलाता है, दुष्कर्म की सजा मिलेगी ।। २ ।।

चोला मानव का पहनकर आया
बडी मुश्कील से, ये चोला तुने पाया
भुले मत धनपूत्र और जाया मोहमाया काम न आयेगी ।। ३ ।।

जैरामदास कहे अब तो राह परख चल
संत वचनों का अब तो धरले बल
कही भी ना हो तुझे हलचल
इह पर किर्ती रह जायेंगी ।। ४ ।।

भजन क्र. १७

[तर्ज–   ]

तेरी सुकर्मों में भरी है कीर्ती
सच्चे विचारो की रखले तू नीती ।। टेक ।।

मिला है एक बार नरतन , करता है इंतजार
यह समय ना करो बेकार ॥ १ ॥ अगर

संत का ईशारा , बारबार, सपना है ये संसार
सब एक है परीवार ॥ २ ॥ अगर

जिवन की रोशनी , दुर करती है अंधकार
जिवो सत्य के आधार ॥ ३ ॥ अगर

स्वकर्म से जीयेंगे , स्वकर्म से मरेंगे
हम तत्व ना बदलेंगे ॥ ४ ॥ अगर

है ज्ञान हममे . देयेंग हम सबमे
य भेद मीटायेंगे ॥ ५ ॥ अगर

कहे जैराम , ईश प्राप्ती करना , यही ध्येय हमारा
वतन के लीए जिना और मरना ॥ ६ ॥ अगर

भजन क्र. ५१
(तर्ज राम तेरी बंशी)

जिनां और मरना , यही देह का काम
कभी बने शाम कभी बने जैराम ॥ टेक ॥

जैसे जैसे समय बदले, वैसे लेते रुप
जैसा बदले जमाना, वैसा लेते सुख
देखे सबको शांती सुख, यहीं उसका काम ॥ १ ॥

व्यवहार असुरों के साथ, वैसी करे बात
अहंकारी का अहं मिटाके, छुडाये पक्ष पात
शांती का सम्राट बनाके, मिटाये, कूनीति तमाम ॥ २ ॥

भक्तों के हीत कारण, प्रभुता भूली सारी
झुठें बेर खाकर, शबरी सें प्रित जोडी
प्रेमीयों के प्रेमी, दयालु उसका नाम ॥ ३ ॥

जैरामदास कहे, हम भिन्न प्रकृती से
सब प्राणी हम एक ही, तत्वमसी के
छोडो ये बैर भाव, भुलो ना देख चाम ॥ ४ ॥

भजन क्र. ५२
(तर्ज– सोमवार को हम मिले)

प्रकृती को देखकर, करते जा व्यवहार
वैसा ही पाते जा, तु रे सदा आहार
इससे रहेगी तेरी तबीयत बहाल
नीति नियम को नही निभाया तो, होगा तेरा बेहाल ॥ टेक ॥

मन तो चाहता है सदा, खट्टा मिठा खाना
इन्द्रियों में है कमजोरी, होवे व्याधी बढाना
जितनी शक्ति हो उतनी, भक्ती करो जोरदार ॥ १ ॥

बुरे नियमोसे तुम्हे ख्याती नहीं मिलेगी
जबरदस्ती का बोझ सरपर, लादे फजिती होगी
देखो सत के पास कभी आये ना वो काल ॥ २ ॥ निती

बोलना है तो हरदम, तौलकर ही बोल
तेरे ज्ञान विचारो का, होवे ना कभी फोल
तन छुटने पर अमिट किर्ती, रहेगी कई साल ॥ ३ ॥ निती

जैरामदास कहे मर्यादा का, फर्ज करले तू अदा
उसी पर ही खुश रहते है, प्रभूजी वो सदा
दुर्गूणो को वो हरदम, करते जा टाल ॥ ४ ॥

भजन क्र. ५३

[तर्ज– ओ शंकर मेरे]

नैनो का तारा, जिवन का उजीयारा
हारे का है वो रखवाला, पिलाये ब्रम्हरस का प्यसला
हो कोई पिने वाला ॥ टेक ॥

पुर्व पुण्यसे नरतन मिला, कई जन्म था मैं भुला
नरका नारायण, बनानेवाला, अजब छबीला हिरा ॥ १ ॥

मेरे जिवन की जिवन ज्योती, बिना तैल की है बाती
वो ही अज्ञानी का दाता, जो चरण सेवक बन जाता
उभारता उसको ही पलमें, ऐसी है किमीया उसमे
नैया लगावे किनारा ॥ २ ॥

सुखे पेड को दे यें पानी, है यह ज्ञानी से भी ज्ञानी
इसके जैसा ना जगत में दानी, शेष शारदा थके बानी
सभी देवता का देवता, ब्रम्हा विष्णु हारा ॥ ३ ॥

जैरामदास कहे गुरु कृपा बिन, सारा जिवन है अंधियारा
शास्त्र पुराण, पढकर भी वह, हुआ नही है अबतक पुरा
चारो वेद नाम को पुकारे, बरसाये अमृत की धारा ॥ ४ ॥

भजन क्र. ५४

(तर्ज– मुझे प्यारा भारत मेरा)

मुझे प्यारा, किसान मेरा
देश धर्म का रखवाला । टेक ॥

तीन देवता यहाँ रखवाले, भारत के है यह सितारे
किसान मजदूर जवान हमारा ॥ १ ॥

समझ जाये यह धर्म नीति को, कमतरता नही किसी जिवको
मिटे दु:ख यह सारा ॥ २ ॥

कर्म से ही भाग्य उजले, राम नाम को फिर भजले
तब नाव लगेगी किनारा ॥ ३ ॥

जैरामदास कहे जागो भाई, सत्य कर्मों को पकडो राही
सत्य अहिंसा धर्म हमारा ॥ ४ ॥

भजन क्र. ५५

(तर्ज – चीत्ती राम माझ्या बसले)

सबका भला जो चाहता, खुश है उसपर विधाता
पडे न कही कमतरता, किधर भी वो मुड जाता ॥ टेक ॥

नीती नियम से प्रित जोडा, मोह माया से मुखडा मोडा
दीन दु:खीयें का पिये दु:खडा, वो ही, है सबका विधाता ॥ १ ॥

श्रध्दा भाव हो उज्वल जितके, प्रभु वशीभुत हुआ उसके
क्रिया काम सारथी बनके, भक्तो के साथ वो रमता ॥ २ ॥

शिस्त का हो रंगीला, ब्रम्ह रस का पिवे प्याला
उसने ही ब्रीद को, सम्भाला, हर जगह प्रभू को पाता ॥ ३ ॥

कहता है जैंरामदास, धरी न कंचन कामीनी सें आस
प्रभुजी है उसके पास, वो ही बुझाये सबकी प्यास
छोडकर अमर किर्ती, निर्वान पद को पाता । ४ ॥

भजन क्र. ५६

(तर्ज– सजनरे झुठ मत बोलो)

इन्सानियत की करे पुजा, जाती पाती से क्या काजा
दया भावना की निती जिसमें, उसके प्रेम मे ही आय मजा । टेक ।

धनी हो या कोई ज्ञानी, गर्व गुमान हो जिसके पास
उससे ना मतलब रखे हम, दीन दु:खीयोकी ना गर्जा ।। १ ।।

जीसकी हो अमृत बानी, सुनकर अडानी बने ज्ञानी
उससे ही प्रीत बने धनी, वोही हमारा जिवन कलेजा ।। २ ।।

जैराम कहे मानवता के सही रुप, उनकी संगत मे मिले सही सुख
सतसंग उनसे करते जा, अपना प्रेम देते जा,
और उनसे प्रेम लेते जा ।। ३ ।।

भजन क्र. ५७

[तर्ज– देखो वो दिवानो]

जो हो गया है, ब्रम्हमय उसका निकला संसय भय
किसीका न डर रहा ।। टेक ।।

देखो जिधर भी मुढ जाये, पग पग में प्रभु को पाये
हर जगह में एक वस्तु, नभ जल मे है तूही तू
कांष्टी और पाषान है तू, देखा वहाँ ।। १ ।।

पहाड से तू पत्थर कहलाया, पुजन से तू देव बन गया
नर से नारायन बन गया, भिन्न भिन्न है नजारे जहाँ वहाँ ।। २ ।।

एक से तू अनेक बना, भक्तोने तुझे एक ही जाना
तुझे बीरले ने ही चिन्हा, बहरुपीया जैसे रहा ।। ३ ।।

इस मर्मको कठिण है समझना, बीरलेने ही इसको जांना
जाना हो तो हुआ दिराना, जैराम गुरुकृपा से कहा ।। ४ ।।

भजन क्र. ५८

[तर्ज– जारे जा वो दिवानें]

जहाँ वहाँ पिया का बासा, गुरु बिन्न मिले न दिलासा
प्रयत्न लाखो कर प्राणी, मिटें न मनकी आशा
बंन में जाके धुनी रमाये, हट योग सें प्राण चढाये
काम क्रोध नित्य सताये, मिटे दिल की इर्षा ॥ टेक ॥

कई शास्त्र का अध्ययन किया, भ्रम भ्रम में उमर गंवाया
किसी जिव की दया न लिया
तिरथ मंदीर रहा घुमता, भाव नही हैं दिलमें समता
रहा जैसा का वैसा
उठ बैठ का हरदम काम करता, कूत्ता और बिल्ली जैसा ॥ १ ॥

ब्रम्ह ज्ञानी खुद वो कहे, दुर्गूण में ही बहता रहे
झुठा दिखावे दिलासा
जैंरामदास कहे ऐसे नर को, साधा नहीं इहलोक परलोक
धन दृश्य में मंडराया
धोका देवे हरदम दीन दुःखीयों को
मिले अंत में नरक वासा ॥ २ ॥

भजन क्र. ५९

(तर्ज– नेकी तेरे साथ)

समय का इंतजार, करते चले
वैसे ही कदम बढाते चले ॥ टेक ॥

इससे तुमको, शांती मिले, देर लगे भले
यह तो जिवन का खेल, जैसी चढें बेल
न जाने कब हो जाये फेल, उमरीयाँ कब ढले ॥ १ ॥

यह संसार, स्वप्न की माया, तन यह कंचन का घर बनाया
माया ब्रम्ह जहाँ वहाँ, ऐसी जगह नही छुटी कहाँ
देख देख क्यों तू भुलें, परखे बीन न भाग्य खुले ॥ २ ॥

जिसने इस का मर्म जाना, हीत अनहींत को पहिचाना
जैरामदास कहे विवेकी बिचार, उसनें निकाला समय का सार
उन्होने ही इसको तौले. भवपार हुये बिरले ॥ ३ ॥

भजन क्र. ६०

(तर्ज– नशीब में जिसके जो लिखा)

जो कुछ भी है अपने को मिला
उसमें गुजर करों, यही मेरी सला ॥ टेक ॥

मन यह ब्रडा पाजी मन चला, हरबक्त जिवके, पीछे लाये बला
देखो ऐसा है यह बावला - ॥ १ ॥

इसकी है यह पैनी धार, इसकी चाल बडी रफ्तार
ज्ञान बुद्धी को देये भुला ॥ २ ॥

जब्र यह स्थिर हो जायें, मानव देख शांती को पाये
पिवे ब्रम्हरस का प्याला ॥ ३ ॥

रंग चले जब, विषयानंद का, काम करे वों तब सैतान का
उठ बैठ का खिलावे खेला ॥ ४ ॥

नरको नारायण बनाये यही, मोक्षकी डगर दिखाये सही
ऐसी है इसमें कला ॥ ५ ॥

स्वर्ग नरक है इसके हाथ, विचार विवेक से करो साथ
नाव का सही है मलाह ॥ ६ ॥

जैराम कहे मन मेरा गुरु, भाव सिंधु से यही उतारु
आतम तत्वसे ही मिला ॥ ७ ॥

भजन क्र. ६१

[तर्ज- धन्य है तोहे देवकी माई]

यह है संतो की बानी, जरा ध्यानमें लारे ज्ञानी
नही तो होगी परेशानी ॥ टेक ॥

राममय करले अपना तन, राम नाम मे लगाये मन
परखले तू अपना वतन, मतकर तू आनाकानी ॥ १ ॥

जिसने संतोका सतसंग किया, जिवन में सुख शांती पाया
बाकीं सब ने सब कुछ खोया, जन्म पाकर के कीया हानी ॥ २ ॥

भक्ती की बेला पीवे ब्रम्ह प्याला, पाया चारो और उजीयाला
हो गया वों फिर मतवाला, ये ही है रोशनी ॥ ३ ॥

जैराम कहे राममय किया घर, उसको रहा ना किसीका डर
सारी लंका जल गई पर, रही ब्रिभीषन की निशानी ॥ ४ ॥

भजन क्र. ६२

(तर्ज- वो मनवा रे)

वो छलीया छलीया कब तक चलेगा तेरा छल
दिखायें अपने तन का बल, दिखाये धन का बल ॥ टेक ॥

गर्व गुमान की बाते करता, दीन दुःखीयोको नित्य सताता
अपनी बढाई खुद ही करे तू, भोले भाले को तू फसाता
तेरी ताकत जायेगी ढल ॥ १ ॥

मानव का तन तुने पाया, दानवताका मार्ग लिया
वाणीमें तेरे तथ्य नही है, असुरी वृत्ती चलाया
किया है करनी मिलेगा फल ॥ २ ॥

फुटकर निकले पाप और पारा, प्रभु का ना उसको सहारा
इहलोक, परलोक में, उसको, लगे कही ना थारा
अंत में रोये हाथ को मल ॥ ३ ॥

भजन क्र. ६३
(तर्ज– आपकी इनायते)

तेरे मेरे नाते युग युग के
इन नैनो को मेरी भुल पडी ॥ टेक ॥

मोह माया अज्ञान अंधकार में, घुम रहा हुँ अंधा बनकर, बनबन में
अंडज, पिडंज, उद्विज, जारज, योनी में,
अगणित देह मिले आयेना समझमें
गुरु कृपा बीन कोई ना परखें ॥ १ ॥ इन

हम तो है तेरे ईश्वर अंश, तेरे ब्रीद का हमे नही है होश
बुंद बुंदेले का सकल पसारा, जाने बीना नैया लगे ना किनारा
इसलिये यहाँपर खाते गोते ॥ २ ॥ इन

अर्जून को बताया श्रीकृष्णने, सूर्यं की उत्पत्ती देखी है मैंने
विर अर्जून को श्रम जब हुआ, बहु दिनोंकी उत्पत्ती कहीं पुरखोने
शंका मिटाई, विराट स्वरुप दिखाके ॥ ३ ॥ इन

संतो के पास है, ज्ञान ज्योती, उससे ही जनम जनम की मिले प्रचिती
जैरामदास देवे, सबको शास्वती, सतसंग में ही मिले अखंड शांती
समझे बीन न जनम मरनके, फेरे चुके ॥ ४ ॥

भजन क्र. ६४

(तर्ज– सात अजुबे इस दुनिया में)

आज दुनिया में मानव ने, आतम विश्वास खोयें
बेचैन होकर घुम रहे है, दिलमें न शांती पाये ॥ टेक ॥

नीती खोई, प्रीति खोई, स्वारथसे, धर्म कर्म ना रहे दुरंगी चालोसे
जो दिलमें आये करना, सही बात न ध्यानमें लेता
उलझन में जकडा रहता है, क्रोध में जिवन गँवाये ॥ १ ॥ हो हो हो

दया क्षमा तो रो रही है, रे भाई, श्रद्धाभाव की पड गई है महंगाई
शिल नम्रता जा रही रोये, सज्जन ये ठोकर खाये
देख अत्याचार सें, मानव ये घबराये ॥ २ ॥ हो हो हो

इर्षा द्वेश भडक रहा है इस जगमें, पार हुई मर्यादा भी अब सिमा से
निकल रही है यह संस्कृती, अनिती बढते जाये
जैरामदास कहे इससे ही, दुख सरपे आये ॥ ३ ॥ हो हो हो

भजन क्र. ६५

[तर्ज– आदमी मुसाफिर है]

जो राम का बन गया, उसको काम क्या सतायें
जिसने प्रभुसें प्रित जोड लिया, उसे विद्वान क्या सिखायें ॥ टेक ॥

भगवाण परिवार, है सब जीव प्राणी
हर जगह देखे एक, वोही ब्रम्हज्ञानी
सारी शक्तीयाँ विश्वकी, नतमस्तक हो जाये ॥ १ ॥

हारे न हिम्मत अपनी, कितना बल धारी हो
कोई ना बिगाडे अुसका, चाहे जग बैरी हो
आसमाँ भी ढलता हो, अपने प्रण निभाये ॥ २ ॥

संकल्प अटल हो, सिद्धांत जिसके
प्राण हरले कोई, बदले ना तत्व उसके
कितीं छोडकर मरे वो, विजयों कहलाये ॥ ३ ॥

कहता जैराम, किया प्रभू पर विश्वास
मोह ममता की, छोड कर के आस
उन्होंने ही निर्वान, पदको पायें ॥ ४ ॥

भजन क्र. ६६
(तर्ज– सुनो भैय्या)

सुनो भैय्या संतोकी सतगुण ही जातीं
दया धरमसे उनकी प्रीती ॥ टेक ॥

चाहे भंगी हो चाहे मुस्लीम, चाहे हिंदु हो चाहे इसाई
रखे सबपर ही समदृष्टी ॥ १ ॥

स्वप्न में ना अपना पराया देखा, किसीका मोबदला लेना ना सीखा
गंगा जैसी निर्मंन वृत्ती ॥ २ ॥

जीधर भी कोई दु:खी पिडीत हो, उधर दौडकर जाते रहे
करे तनमन की आहुती ॥ ३ ॥

पिर पराई हरना काम, करुणा प्रेम ही उसका धाम
ना बैर किसीसे ना ही दोस्ती ॥ ४ ॥

जैरामदास कहे संतोको, खाणी बाणीसे ही परखो
मिलेगी तुमको प्रचीती ॥ ५ ॥

भजन क्र. ६७
(तर्जं– धरती मेरी माता)

आज अलालीसे, बढ गयी महंगाई,
देखो उन्नती आज, खिसक रही ॥ टेक ॥

बातोंका जमा खर्च सब लोग करते ।
कर्म के तरफ कोई ध्यान नही देते ।
समाजमें आज बढ रही बुराई ॥ १ ॥

पांच करे काम, पचास करे आराम ।
सदाचार से दूर ये, प्रीय इन्हे आराम ।
कुचली जा रही है, देखो सच्चाई ॥ २ ॥

फॅसनके साथ साथ, व्यसन भी बढ गया ।
शोषन वृत्ती बढी, बुराईसे प्रीत किया ।
तकरार करे ये भाई भाई ॥ ३ ॥

जैरामदास कहे, कर उन्नती की और ध्यान ।
स्वार्थको त्याग के, कर खुद की पहचान ।
मानव तुझे आज, मिलेगी दुहाई ॥ ४ ॥

भजन क्र. ६८

[तर्ज– सच्चे को है मेरा साथ]

पहले अपने दिलको टटोले, फीर अच्छा बुरा बोलो
मनके मैल को धोलो ॥ टेक ॥

जब हम है चोर, डाकु, दुनियाको वैसाही देखु ।
सत्य असत्य परखो अपने तत्वको परखलो ॥ १ ॥

सज्जन के घर रामका बासा, पापीके मनमें दुरव्यवहार की भाषा
अपनी मनकी आँखे खोलो, फीर अच्छा बुरा बोलो ॥ २ ॥

जैसा करे कर्म वैसा उसका धर्म, वैसाही वो पाये मर्म
नर्क स्वर्ग का सुख दुःख, यहाँ ही भोग लो ॥ ३ ॥

जैराम कहे सिद्धांत तुम्हारे साथी, जैसी बहे तुम्हारी मती
अपने सच्चे बिचार मिलालो, फीर अच्छा बुरा बोलो ॥ ४ ॥

भजन क्र. ६९

(तर्ज– पुंडलीका भेटीं)

श्रद्धा भाव दृढ जिसके, चित परम पुनीत उसके ॥ टेक ॥

जो भी काम करे प्राणी, तल्लीन होवे ब्रम्हध्यानी ।
आत्म तत्वकी चले वो बाणी, किसीके आगे ना झुके ॥ १ ॥

शरणागत प्रभु हो जाये, सभी ठिकाणें शांती वो पाये ।
रोडे ना राहोंपर आये, प्रभुजी काम करे उसके ॥ २ ॥

सभी जीवोमें उसकी प्रीती, मानवताकी अपनाये नीती ।
सुकर्मही उसकी ख्याती, उज्वल भाव हो मनके ॥ ३ ॥

जैराम कहे ब्रम्हज्ञानी. वेदोकी ना चले बाणी ।
रीद्धी सिद्धी भरे पाणी, तीन्ही देवता झुके ॥ ४ ॥

भजन क्र. ७०

[तर्ज– माने ना हरगीज मन मेरा]

अलालीसे किया उसने अपने परीवारका बेहाल
बीबी बच्चे भुके रहते, मीलेना उसे आटा दाल ॥ टेक ॥

कर्म को वो भूल गया, गमायी उमर बातोमे ।
धर्म नीतिको न जाना, धरी है छल कपटकी चाल ॥ १ ॥

परायी धनपर वो पले' ठगबाजी चले चाल ।
बीना श्रम तन ये पाले, पुण्यको किया उसने गोल ॥ २ ॥

आदतसें है ये बुरा, सेवन करे वो मदीरा ।
गरीबोंको लुटे वो लुटेरा, करे दुनियामे हरदम छल ॥ ३ ॥

कहे जैराम अभागा, मानवताको नही जागा ।
भूमीपर भार लफंगा, जायेगा यम के ओ गाल ॥ ४ ॥

भजन क्र. ७१

(तर्ज– तू निरख निरखकर बढता जा)

तेरी लगन हो भजन गाने में ।
ईश्वर तत्व को पानेमे ॥ टेक ॥

भावना प्रधान बना रख मनमें, भक्ति मार्ग चलने में ।
तत्व तत्वको परखते जारे, खोजले तू अपने मनमे ॥ १ ॥

शिल नम्रता की होवे वृत्ती, ब्रम्ह मे ही बहे मती ।
उसमेही मिलें तुझे शाश्वती, विवेक से ही चलनेमें ॥ २ ॥

शद्ब शद्ब मे बढते जारे, नीज धन को तु पाते जारे ।
चीत्त बुद्धी स्थिर करले, पीया मिले वो सहजमे ॥ ३ ॥

भक्तीका जब रंग चढे, जीया हरदम उछले ।
अंत:करण से लहरे उठे, टकराये गगणमे ॥ ४ ॥

जैराम कहे निरविकल्प समाधी , मीटे उसकी सारी उपाधी ।
कही न बादे उसको उपाधी, मस्तहुवा सतगुरु धुनमे ॥ ५ ॥

भजन क्र. ७२

(तर्ज–सुबह और श्याम)

निष्काम कर्म मे जो, करता है काम,
वोही सुख शांती पाता, लेता विश्राम ।
जो श्रद्धा से भक्ती करा, उसे मिले मोक्षधाम, धाम, धाम ॥ टेक ॥
दुसरे के दु:खडेको पिकर ले गरीबोंकी दया २
धर्मं नीती सबको सीखांये,
दुनियामे अमर रहे, नाम, नाम, नाम ॥ १ ॥

अपने बल बुतेपर, जीसने भविष्य उज्वल किया २
वोही सबका मार्गदर्शक है,
विचार देवे ठाम, ठाम, ठाम ॥ २ ॥

वोही नर इस दुनियासें, किर्ती छोडकर गया ।
सबका भला चाहा उसने,
कहे जैराम, जैराम, जैराम ॥ ३ ॥

भजन क्र. ७३

(तर्ज– दिलमे तुझे बिठाके)

ये मनके मन चले, छलके चले चाले ।
मनके है काले, पल पलमे विचार बदले ॥ टेक ॥

पक्षपाती, जातीवाद, फैला रखे है इन्होने ।
खुन चुसे दीन गरीबोंके, इन दलालोने ।
आपसमें ये, फुंट डाले, मतलबका खेल खेले ॥ १ ॥

फुंट डालकर, मजा लुटे, बीन श्रम मिले खाने ।
मनमें धरकर, गंदे इरादे, लगते मुर्ले लडाने ।
किसको न सुख मिले, दु:ख में ही दिन ढले ॥ २ ॥

कहे जैराम, आँख रहकर, यह है मुरख अंधे
धर्म नितीसे ना, इनकी प्रीती, प्रभूसे रहते जुदे ।
मानवताके ये भुले, समाजमें किये घोटाले ॥ ३ ॥

भजन क्र. ७४

(तर्ज– श्याम तेरी बन्सी पुकारे)

गरीबोकी दशा ये, देखी न जाय
किसको है हमदर्दी, आगे वो आये ॥ टेक ॥

बडे बडे आश्वासन, दिलासा देते ।
अपना स्वारथ निकलनेपर, पीछे मुढ जाते ॥
माया के पागल ये, क्या समझ पाये ॥ १ ॥ किसको

तेरे मेरे सपने में, जिवन बिताये ।
झुठ मुठ के जाल, बिछाकर फसाते रहे ॥
वो क्या जाने दु:ख पराया, अपनाही गीत गाये ॥ २ ॥

मिठी मिठी बाणी ये, हरदम चलाते ।
कुटनितीकी भावणा, दिलमे ये रखते ॥
बगल में है छुरी, ये राम नाम गाये ॥ ३ ॥

कहे जैराम अपने परसे, जग को परखते ।
दुसरे के दु:खको, अपना समझते ॥
पराई पीर जो हरे मेरे मनको भाये ॥ ४ ॥

भजन क्र. ७५

[तर्ज– शहीदो के खुन का]

दर्दको मेरे कोई न जाणे, झुठेही मारे मुझपर ताने ।
सत्य क्या है, असत्य क्या है, इसको नही किसने चिन्हे ॥ टेक ॥

लगन है बचपनेसे दिन दु:खीयोंकी सेवा करना।
परीश्रम के कमाईपर, अपणा जिवन बिताना।
कोयी तर्क मनाये, कुछ भी कहे, सच झुठ माने ॥ १ ॥

उसका कर्म कुछ ना किया, पृथ्वी भार भया।
आया हुँ मानवता का फर्ज निभाने ॥ २ ॥

गणगोत्र कुटुंब परीवार, मिलते ही रहेंगे।
सुख दुख यह, भोगतेही रहेंगे।
यह तन मिला है, भगवानको पाने ॥ ३ ॥

जैरामदास कहे प्रण मेरा, सत्यतासे निभाते रहना।
किसीका न फुकट खाना, यही तत्व मैंने ठाना।
मरना जीना खेल बनाया प्रवृत्तीनें ॥ ४ ॥

भजन क्र. ७६

(तर्ज– अगर है ज्ञान को पाना)

जिसने देना ही देना सीखा।
लिया न कभी पैसा रुखा ॥
वही है समाज का ही सखा।
दाता है वो गरीबोंका ॥ टेक ॥

सायी हरीयाली जिवन में, सदभावना रखें सब जिवो में।
धर्म नीति का वो ही पक्का ॥ १ ॥

दु:खीयों के दु:ख को जिसने जाना।
अपने परसे सबको पहिचाना ॥
किसी को ना दिया उसने धोका ॥ २ ॥

श्रद्धा में ही सदानंद बैठे, ।
हृदय में ही ब्रम्हानंद डटे ॥
ज्ञानी है वो आतम तत्व का ॥ ३ ॥

जैराम कहे निष्ठा सें मिले प्रतिष्ठा।
दृष्टा में ही भरा है अदृष्ठा ॥
वो भेदिया है ईश्यर के घरका ॥ ४ ॥

भजन क्र. ७७

(तर्ज– गरीबो की जिंदगी भारी सजा)

जो गरीबोंकी सुने करुणा पुकार ।
दुनियां मे होवे उसकी जयजयकार ॥ टेक ॥

शांती ही हर किसी की शोभा ।
अहिंसा की चलावे जुबा ॥
हर ठिकाने करे सभी सत्कार ॥ १ ॥

पर दुःख को जो अपना समझाते ।
कहीं न देखा धर्म दुजा ॥
मानव जन्म लेकर जिवन नैया किया पार ॥ २ ॥

दुःखडे मे ही देखा मुखडा ।
हर घट में ही राम है खडा ॥
येही विशेष है उसका चमत्कार ॥ ३ ॥

कर नर नारायण की सेवा ।
चारो फल उसने ही पाया ॥
दुर्जन भी करता नमस्कार ॥ ४ ॥

जैराम कहे एक परही भरोसा।
दुजा न रखा कहीं पर आशा ॥
सब जिवो से रखे भाई चारा ॥ ५ ॥

भजन क्र. ७८

[तर्ज– अगर है ज्ञान को पाना]

भाविक पिढी हो संतकर्मों की, भावना हो निष्काम कर्मों की ।
होगी उन्नती देश समाज की, झांकी भरी हो मानवताकी ॥ टेक ॥

अंधश्रद्धा रुढीवाद इससें हो गया समाज बर्बाद ।
क्रोध कीं ज्वाला भडक रही है, जहाँ देखो वहाँ वादविवाद ॥
मुख में बोली छलकपट की ॥ १ ॥

दया धर्म कुचला जा रहा है, ।
नीति नियम बिगड रहा है ॥
छोटे माने ना बात बडो की ॥ २ ॥

जैराम कहे, नही सुधरोंगे ।
धोंका दिखता है, मुझको आगे ॥
पाली आयेगी विनाश की ॥ ३ ॥

भजन क्र, ७९

(तर्ज– दिल के तुकड, तुकडे करके)

वास्ता मेरा, ना किसी के, जाती और पाती सें ।
मेरा प्रेम है न्याय नीतिसें, सद्‌भावना की वृत्तीसें ॥ टेक ॥

धनी हो या, कोई भीकारी,
ब्राम्हण होया, क्षुद्र भाई
उजले कर्म से ही मिताई ऽऽऽ

सच्चाई हो, दिलमें उसके,,
प्रिती जूडी हों, मानवता सें
प्रेम करें वों दया धरम में
शिल नम्रता सद्‌गुण अंगमें,
व्यवहार करे वो समलासें ।। १ ।।

समाज देश का, हित हो जिसमें
तन मन धन सें, लगा हूँ उसमें
धुंद भरी है इन नैनो में
साकार करना है आजादी कों
शाती मिलेगी, जिसमें सब कों
दुख ना होवे फिर किसिकों
जैराम की आशा यहीं है,
प्रीती जूडी है स्वकर्म से ।। २ ।।

भजन क्र. ८०

(तर्ज– ये मेरा प्रेम पत्र पढकर)

मानव की भ्रष्ट हुई मती, छोडी है ईमान की नीती ।
फसल ना दे रही खेती, जगत में फैली अशांति ।। टेक ।।

भ्रष्टाचार का बोलबाला, सज्जन जा रहा कुचला ।
वो झूठा अलाल निठुला, दुजे का माल हडप चला ।।
समाज में बुरा रोग फैला, निकल चली बंधुभाव प्रीति ।। १ ।।

जकडे है तेरे मेरे में, एक दूजे की बुराई में ।
नही दयाभाव इनके दिल में, उमरिया खो रहे है छल में ।।
शील नम्रता के नहीं भाव इसीसे आई विपत्ती ।। २ ।।

जाती पांती का बडा जोर, मानव मानव हो रहा दूर ।
देखेना अपना कोई कसूर, कहता अपनें को ही शुर ।।
इसीसे फैली है व्यथा, भडक रही क्रोध कि वृत्ति ।। ३ ।।

भाविक पीढी निर्माण होवे, जीवजग सुख शांति पावे ।
तेल बिन दीप न जल पावे, सत्य बिन शोभा न आवे ।।
कहे जैराम देव मानव. एक दूसरे से है दोस्ती ।। ४ ।।

भजन क्र. ८१

(जैरामाशी काय वर्णावे)

हम घरवासी सन्यासी, गृहस्थी में रहकर करे भक्ति हो ।। टेक ।।

काम मे देखते राम,
उसमें लेते विश्राम,
इसमे ही मजा हमे आती हो ।। १ ।।

शिस्त से चलाये प्रपंच,
कही भी ना पडे कमतर्त
रखकर शुद्ध भाव वृत्ती हो ।। २ ।।

करे मदत समय समय पर,
पडे मुसीबत किसी भाईपर,
तन मन की करे आहूतो हो ।। ३ ।।

दृढ निश्चय संकल्प हमारा,
देश धर्म समाज का नारा,
संस्कृति हमारी भारती हो ।। ४ ।।

जैराम कहे प्रेरणा हमे,
मिलती संत संगत मे,
ज्ञानेश्वरी गीता बतलाती हो ।। ५ ।।

भजन क्र. ८२

(तर्ज– भजन बिन निंद न आये)

सत के बिना सुना जिवन संसार
श्रद्धाभाव, दया और शान्ति मानव का सिंगार ।। टेक ।।

शोभा भक्ति की राम नाम, यें लेवे बारम्बार ।
वाचा मानसा कर्मनासे, तत्व का मिले सार ।।
अन्तर रंगमें रंगे जो प्राणी, तन कों गया बिसार ।। १ ।।

झरने, नाले मिले नदीको, मिलन से बनी दरियाँ ।
चित्त बुद्धि मन स्थिर होवे, आत्मज्ञान मिलीयाँ ।।
निवृत्ती निरझर उठे तरंग, सुमन खिलें बहार ।। २ ।।

स्थूल, सुक्षम् एक ही ब्रम्ह, सगुण निर्गुण सार ।
जीव भ्रम मिटे तब, शिव प्रकाश अधिकार ।।
हंसा बनकर दूध पिये, छोडा पानी यार ।। ३ ।।

जैराम कहे कल्प विकल्प, मन की कमजोरी ।
कर्म अकर्म बाधा डाले, जीव फिरे फेरी ।।
रुप स्वरुप यें खेल जगत का, अगोचर दृष्टि निहारी ।। ४ ।।

भजन क्र. ८३

(तर्ज –सोईजा तारा हो सोईजा तारा)

पाया हीरा हो, पाया हीरा ।
सत संगत मे, उसके ही रंग में ।
अपना आप पाया, स्वरुप सितारा ।। टेक ।।

कचरे मे गुमा ये मानिक, कई दिन ये बीते ।
ढुंडते ढुंडते थक गया था,किस्मत हुये जगते ।।
गुरुकृपा का, अन्जन लगाया, निज धामा पाया, प्रीतम प्यारा ।। १ ।।

चित्त चिन्तामनी पारस मिला, रहीना किसीकी आँस।
मालीक मेरे प्रभूजी है, मै उनका हू दास।
चरण बलिहारी, दुःख निवारी।
मुकुंद मुरारी प्राणोका प्यारा ॥ २ ॥

वो है मेरे चाँद और, मै उनका हूं चकोर।
उनके बिना, रहना पाऊँ, डगमग फिरे नजर ।
जलबिन मछलियाँ, तडपे दिन रतियाँ।
वैसाही मेरा जीवन ये सारा ॥ ३ ॥

प्रभू मेरा पतिदेव है, मैं उनकी जाया ।
उस छायाके आधीन होकर, नवजीवन पाया ॥
कोईना भावे स्वर्गसुख देवे, हरी भजनही, लगता प्यारा ॥ ४ ॥

घायल की गति घायल जाने, दुजा न जाने कोय।
जिसके उपर बीती ये बाते, समझ वोही पाये।
जैराम का अनुभव, सतसंग मिले, साथ पकडले टूटे भवफेरा ॥ ५ ॥

भजन क्र. ८४

(तर्ज– सोईजा तारा हो सोईजा तारा

संत इशारे हो संत इशारे
सबसे है न्यारे, अमर ये धरे
विश्व व्यापक परे, स्वरुप सितारे ॥ टेक ॥

ज्योतिष शास्त्र, गणित आधार, भविष्य बतलावे ।
सिद्धि साध उपाधी लादी, काम ना वो आवे ॥
बानी सिद्ध होवे, बांझ पुत्र देवे, सच्चा नही ज्ञान वादे अधुरे ॥ १ ॥

सहस्त्र दल में अखंड समाधी, छुटे उपाधी।
सहजा सहज, रमे निरन्तर रहनी ये साधी ॥
अटल ये बानी, परखे संत् मुनी, चाहे ढले चंद्र सूरज तारे ॥ २ ॥

अगम निगम है खेल इनका, ब्रम्हा बानीं बोल।
शेष शारदा मौन हुये है, चलेना उनका बल ॥
बिरले ने पाया, भेद का मर्म, कौन बखाने, सब है अधूरे ॥ ३ ॥

है ये कोमल मख्खन से भी, वज्र से है ये कठोर।
चाहे कोई प्राण हरे भी, वचन न देवे मोड ॥
मूढमती से, जैराम बखाने, अगोचर दृष्टि अलक्ष निहारे ॥ ४ ॥

भजन क्र. ८५

(तर्ज– जिया ले गयोजी मोरा सावरियाँ)

पानी दुधभाव मे बिक जायें
सत संगत के वो गुण पाये ॥ टेक ॥

दुर्गुण मिटा ऽऽऽ: समरस बन गया
लीन नम्रता, मे बट यया।
भेद मिटा ऽऽऽ अंभेद भया ऽऽ
मिलना मिलाना सिख पाये ॥ १ ॥

जल के उपर लकडा तैरे,
सभीं प्राणी को पार उतारे
नाम की महिना, जड जीव कामा
भव सागर से पार करे ॥ २ ॥

संत के संगत मे गणिका तर गयी
वेश्या वृत्ती क्षण मे बदल गई
लेके नाम ऽऽऽ अजामिलने
परम पद को वो पाये ।। ३ ।।

कहे जैराम, मै ही बिगडा
माया का सब तोडके झगडा
संत संग मैने पकडा
चढ गया भक्ति का रंग ये ।। ४ ।।

भजन क्र. ८६

(नोट- भविष्य वाणी)

[तर्ज– रामचंद्र कह गये सियासे]

कौडी कौडी धन जोडके रखा, एक दिन छीना आयेगा ।
गरीबो का ये खून पसीना, एक दिन रंग दिखायेगा ।। टेक ।।

अब वे दिन दुर नही है, सन्मुख तुम्हारे है खडे २ ।
देर लगतीं है बनने बनाने, छोडो तुम झुठी चाले २ ।।
सब मिल कर जो बांट खायेगा, सतयुगी कहलायेगा ।। १ ।।

रखकर लालच भरी आशॉए, रखेगा जो स्वारथ भाव ।
उसका तो अब पतन होयेगा, कही ना मिलेगा उसको बचाव ।।
ईश्वर शक्ती खेल जगतका, जानेगा सुख पायेगा ।। २ ।।

असूरी वृत्तिजब बढती है, कही शांति ना मिलती है ।
इनका दमन करने के लिए दैविक शक्ति जगती है ।।
सच्ची आत्मा प्रकट होकर, मानवता को बचायेगा ।। ३ ।।

घुसखोरी और कालाबाजार, राक्षस कुचला जायेगा ।।
नवयुग का निर्माण होयेगा, राम राज्य कहलायेगा ।।
मानव मानवसे प्रेम करेगा, ईमान से जीवन बितायेगा ।। ४ ।।

जाखो यारों अग्यानता से, प्रेम करो भलाईसे
जिसमे होवे अपना भला, चलो उन्ही राहो सें ।।
जैराम कहे वोही नर, नया जमाना देखेगा ।। ५ ।।

भजन क्र. ८७

[तर्ज– रामचंद्र कह गये सियासे]

हृदय परिवर्तन, दया धरम से, होवे सत, युग का निर्माण
दमन होवेगी असुरी वृत्ती, होगा मानव का कल्याण ।। टेक ।।

दैविक शक्ती प्रेरणा से, आयेगी हरीयाली जीवन मे ।
ज्ञान की किरणे प्रकाश देवें, शांती मिलेगी हर घर में ।।
बन्धु भाव का नाता जुडेगा, धर्म बनेगा वो बलवान ।। १ ।।

फुट की दिवारें टूट पडेगी, सत्य अहिंसा क्रांती से ।
बहती रहेगी प्रेम की दरियाँ, आत्मा आत्मा के मिलने सें ।।
खिल उठेगी भुरझायी कलियाँ, महकाये सारा उपवन ।। २ ।।

गुंज उठेगी आनंद की लहरे, मँडरायेंगे मन के भौंरे ।
ब्रम्ह बोध का रस चूसेंगे, स्वाति चंद्र चकोरे, ।।
अमीर गरीब सब मिल जूलके, होयेगा सब का संघटन ।। ३ ।।

कहता जैराम स्व कर्म से, स्वाधिनता को टिकायेंगे ।
अभिमान का त्याग करेंगे, स्वाभिमान से जियेंगे ।।
ये ही संस्कृती भारती कहती, जागो बालक वीर जवान ।। ४ ।।

भजन क्र. ८८

[तर्ज– ये कैसा सुर मन्दिर है]

दु:खियो के हितकारी है, वो दीन दयालु प्रभू ।
दौडे आते संकट पर वो, ब्रीद सम्भाले प्रभू ॥ टेक ॥

बिना श्रद्धाभाव, किसीको ना मीले कभी ।
दया करुणा, की आहे, समझी ना जिसने कभी ॥
ये पंथ, जटिल है बडा, आयेना कभी लभू ॥ १ ॥

दिलवर दिल है जिसका, उसने ही मजा चखा ।
इन्द्रीयोंपर काबु रखा, मर्म उसने ही परखा ॥
मन पर संयम करे जो नर, जीता वोही बाजू ॥ २ ॥

तन खोया, धन खोया, अहंकार सब मिट गया ।
बचा नाम ही साथी, जुडी प्रितम से वो प्रिती ॥
स्थिर चित्त जब होवे, प्रभु हुये काबू ॥ ३ ॥

जैराम कहे ये, अनुभव अपना आप लेते जाओ
बिना मरे स्वर्ग ना दिखे, मरना जीना सीख पाओ
मार्ग ये है अटपटा, गुरु बिन मिलेना कब हूँ ॥ ४ ॥

भजन क्र. ८९

(तर्ज– मिलती है जिन्दगी में महोब्बत)

उल्टे नजर से देखले, जलवा कैसा दिखाये
नयना ये थम जाये, अजब छबी दिखाये ॥ टेक ॥

ठिकाना जन मन का, सुध ना रहे इस तन की ।
बरखे लहरे लहर की, फुलवारी फुले ग्यान की ॥
उडे फौवारें दिल के, परमानंद समाये ॥ १ ॥

जहाँ रात ना और दिन है, जहाँ तेल ना और बाती ।
चन्द्र सुरज फीके है, जलती अखण्ड ज्योती ।।
छन छन दश दिशा में, बाद कानों मे आये ।। २ ।।

सूरत है ना मूरत है, पता ना गांव नाम का ।
दृश्य अदृश्य नही है, दृष्य बना वहाँ का ।।
आप ही बोले और गाये, खुशियाँ वहाँ मनाये ।। ३ ।।

कहता है जैरामदास, लग जब निजध्यास ।
सहजा सहज प्रकाश, मीटे माया की आस ।।
छूटी सभी झंझटे, चिन्मय स्वरुप को पाये ।। ४ ।।

भजन क्र. ९०

(तर्ज– बालम आये बसे । मेरे मनमें)

दिन बिताये रात आयी, सृष्टि चक्र मे रुकना पाई ।। टेक ।।
चले रफ्तार, एक सरीखा, आवत जावत कोई ना देखा ।
जीव चले चौऱ्यासी फेरा, सतसंग बिन मुक्ती न पाई ।। १ ।।

कोई बने ये झाड झडुले, कहीं कहीं देखो दर्या नाले ।
कहीं कहीं देखो पत्थर मुर्ती, सबमे आत्मा बसाई ।। २ ।।

आप ही माली, आपही फुलवारी, पानी देवे ज्ञान झारी ।
भेद प्रभुका कोई ना जाने, अपनी लीला आप रचाई ।। ३ ।।

भेद न जाने इसका अनाडी, जैसे मृगनाभी कस्तुरी ।
बन बन घुमे सुगंधी लेने, स्थान न खोज पायी ।। ४ ।।

त्रेता व्दापार हर दम देखा, कलीयुग, सत युग नूतन देखा ।
कई जन्म लिये यहाँ पर, जीव अमर कहलाई ।। ५ ।।

जैरामदास कहे, सतसंगत मे, ज्ञान बिना विवेक न होते ।
सत गुरु कृपा बिन, अनुभव करो दिल माही ।। ६ ।।

भजन क्र. ९१

(तर्ज- आग लगी हमारी झोपडींयाँ में)

न्याय रोवे गुंडे बजरियाँमे; जहाँ तहाँ हल्ला ।
मान मर्यादा जाये कुचला, अन्याय तुला ।। टेक ।।

झुठ मुठ का गावे गाना, खावे दाल रोटी ।
चढी बढी बात करे, आज पसन्द आती ।।
हाय, हाय, हाय, जिया मचल जाये, अरे धरम डुबते चला सुन । १

छोटे बडे की बात न माने, मारे अपने ताने।
लाज शरम बिक डाले, करे हजारो गुन्हे ।।
छुप, छुप, छुप, करे पाप खुप, अरे सत्य का निकला दिवाला ।। २ ।

नई नई फैसन आई, व्यसन हल चल की ।
अंहकार ने लि अंगडाई, बुद्धी भ्रष्ट हुई ।।
धुम, धुम, धुम, नीति गई गुम, अशांती का रोग फैला सुन ।। ३ ।

कहे जैरामदास, प्रभु पर ना विश्वास ।
इससे ही हो रहा, मानव का विनाश ।।
दु:ख, दु:ख, दु:ख, कही नही सुख, अरे संत चरण में भला सुन ।। ४ ।।

भजन क्र. ९२

(बार बार आवे ना, रतन)

छुटा बाण वापस ना आवे, घायल करके छोडे रे ।
आत्मा से ये निकली आहे, थामे से ना थमे ।। टेक ।।

राम नाम मे हुआ दिवाना, कर्म कभी ना भुले सारे ।
निष्काम भाव रखे है दिलमें, दुनियां से नही डरनारे ।। १ ।।

क्या किसीसे लेना देना, क्या किसी की चिन्तां रें ।
छोडी जगत की माया ममता, क्या किसीसे रिश्तारे ॥ २ ॥

तन निछावर किया एक पर, तनकी फिकर नहीं उसको रे ।
हाड, मांस की काया एक दीन, मिट्टी में मिल जावे रे ॥ ३ ॥

सत का जिसने पथ पकडा है, झुट तरफ क्यों जायेगा ।
जैरामदास कहे सुन भाई, पाया वो क्यों खोयेगा ॥ ४ ॥

भजन क्र. ९३

(तर्ज – पुछो ना कैसे मैने रैन बिताई)

मेरो धीरज एक साँवरियां ।
वोंहीं सुने दुःख की बतिया ॥
कोई ना यहाँ मेरो साथियाँ ॥ टेक ॥

तमलब की है, दुनियां दारी ।
करे स्वार्थ हित, प्रेम भारी ॥
निकलत काम, होवे छलियाँ ॥ १ ॥

कामी क्रोधी, राहों में ठाडे ।
हरदम डाले, अपने रोडे ॥
चलते आवे कठिनाईयाँ ॥ २ ॥

अनमोल समय, निकल रहा है ।
काल भौंरा, मण्डरा रहा है ॥
दिल धडके, तडपे जियां ॥ ३ ॥

जिस कारण में, यहाँ पर आया,
कामना पुरती, करना पाया ॥
व्यर्थं, झंझट में समय खोया ॥ ४ ॥

जैराम कहे, दीन हीतकारी ।
अर्जं ये सुनले, मोरी मुरारी ।।
नाम ये, तेरा, मन में बसिया ।। ५ ।।

भजन क्र. ९४
(तर्ज-बार बार नही आवे सरतन)

दिल में नही शांती जिसके, ज्ञानी वो नही कहलावे ।
विषयों की जब आस धरी, आतम सुख नही पावे रे ।। टेक ।।
रमा नही मन रामनाम मे, भक्ती नही वो रवोकी रे ।
घिस घिस कर काया धोये, मन को नही तू धोया रे ।। १ ।।

अन्त:करण में मैल भरा है, प्रभु कैसा तुझे मिलेगा रे ।
ज्ञान वैराग्य नही है तुझमें, मुक्ति कैसी पाये रे ।। २ ।।

शील नम्रता दया भाव के, गुण नही है तेंरे पास ।
व्यर्थ की तू बड बड करता, बकवास करता झुठी रे ।। ३ ।।

जैरामदास कहे बिना श्रद्धा कें, हरी चरण नही मिलंते रे ।
राम भजन बिन शांति नही है; जिवन जाये व्यर्थ रे ।। ४ ।।

भजन क्र. ९५
(तर्जं- तुम भटको जंगल पर्वंत)

तुम भटको मन्दिर मस्जिद, सब संत संगत मे पाया हैं ।
नही कही वो दुजा बसा है, अपने में आजमाया है ।। टेक ।।

अनंत ब्रम्हाण्ड, तन में धरे है, मेरा हरीहर आत्माराम ।
भिन्न भिन्न बसेरा उसका, बिरला मर्मं का पावे धाम ।।
रोम रोम में ही भरी नशा है, राम रतन धन पाया है ।। १ ।।

इस तन में ही बाग बगीचा, खती बाडी और उपवन ।
पहाड पर्वत दरियाँ नाले, नदियाँ दरियाँ बहे पवन ॥
सात समुन्दर, चौदा भुवन, एक्कीस स्वर्ग धारे है ॥ २ ॥

चंद्र, सुरज औंर ये तारे गन, कोटी रश्मि बिखारे है ।
कोयल, पपीहा, गीत गाये, सुन्दर दृश्य प्यारा है ॥
चम्पा चमेली, गुलसन जाई, अमिट खुशबू महकाये है ॥ ३ ॥

माली बनकर पानी देवे, फूल तोडकर ले जावे ।
आपही फूल और आपही दोरा, माला आपही गुथलावे ॥
खोजी हो तो खोज ले तन में, जैराम ये ही जताये है ॥ ४ ॥

भजन क्र. ९६

(तर्ज– तुम भटको जंगल पर्वत)

जिसके दिल में नीति होती, मरने पर कीर्ती रहती ।
सच्चाई का पथ जो पकडा, छोडेना कभी वो भक्ती ॥ टेक ॥

आसमान भी ढले उसपर, उसकी ना कभी करे फिकर ।
भरोसा रखा प्रभुके उपर, बन गया है वो निर्भर ॥
वीरता का वो बाना चढाया, दुश्मन से करे क्रांती ॥ १ ॥

देश धर्म का प्रेम भरा है, वतन के लिए सीना खोला है ।
भरोसा रखा प्रभु के ऊपर, तनक ना हिम्मत हारा है ॥
ईमानदारी फर्ज निभावे, तन रहे या होवे माती ॥ २ ॥

विश्वास पुरखों के वचनोंपर, ऋषिमुनी और सन्तो पर ।
आज्ञा उनकी वो पालन करे, पग पग पर वो ध्यान धरे ।
चिढ उसको दगाबाजों की, अनीती पर पीटे छाती ॥ ३ ॥

स्वाभीमानसे जोना सिखा, अभिमान जड से फेका ।
परजीवों का दुःख सुख देखा, समरस हो उसको चखा ॥
जैराम कहे देह ऐसा, जोडा विश्व से प्रीतो ॥ ४ ॥

भजन क्र. ९७

(तर्ज– गजल ताल धमाल)

फकीरी लगती मुझको प्यारी, उसीका आशिक दिवाना हुँ।
नैनो में नशा वो छायी, नजारे देख रहा हुँ ॥ टेक ॥

बदनपर लंगोटी शोभे, माथे भस्म लगाया हुँ।
गलें में तुलसी की माला, सोहम की धुनी रमाया हूँ ॥ १ ॥

कर मे त्रिशूल चिमटा, बगल में झोली लटकी है।
अलख पुकांरु घरघर में, निजधन भीक मांगता हुँ ॥ २ ॥

अनुभव की थाल यें रखी, विवेक का परसा है भोजन।
रामनामका ये ग्रास, भगवान को भोग लगाता हुँ ॥ ३ ॥

कहे जैराम प्रीतम की प्रीत, वहाँ पर है हमारी जीत।
हरदम यही सुनाता हुँ नैनो की प्यास मिटाता हुँ ॥ ४ ॥

भजन क्र. ९८

(तर्ज– सच्चे सेवक बनेगे हम)

अरे भविष्य जिसका उजला नहीं, वो दुसरों का क्या उजला करे।
शांती की नही पाया जिसने, पीर पराई कैसी हरे ॥ टेक ॥

दर दर की ये खाये ठोकरे, पेट भरन की फिकर जिसे।
क्या धरा इनके ज्ञान में, घुमे ढोंगी बगुला जैसे ॥
अरे आप अपने की नही चीन्हा, दुजे पार कैसा करे ॥ १ ॥

दुविधा में तो पडा बेचारा, माया मिले ना राम उसे।
घर का रहा ना घाट का रहा, दोनो तरफसे हाथ पिसे ॥
अरे मदारी के बंदर जैसे, चहूँ और घुमता फिरे ॥ २ ॥

जैराम कहे कर्म अकर्म, देखके आगे बढते जाओ ।
जिसमें होवे अपनी भलाई, उस पथ को ही अपनाओ ।।
ईमानदारी दिल मे रखकर, मानव फर्ज अदा करे ।। ३ ।।

भजन क्र. ९९

(तर्ज– सच्चे सेवक बनेगे हम)

सन्तों का ये धरम नही, जनता का धनलूट पाट करे ।
अपना संसार सुखी बनाकर, दुनियां को बरबाद करे ।। टेक ।।

जिस नाम की पहिनी माला, फर्ज अपना अदा करे ।
घिसते रहे वे तन को अपने, सेवामें वो भाव धरे ।।
होवे लगन देश धर्म की, जीना मरना विचार न करे ।। १ ।।

दुनियाँ के आगे हाथ फैलायें, कहता अपने को सांधु ।
कैसे मुरख जहाँ वहाँ फैले पडे है सब भोंदू ।।
राम नाम उच्चारण करे, पर धन पर वे नजर धरे ।। २ ।।

साधु तो वोही सच्चा है, दुनिया को जो ज्ञान देवे ।
मुंह बदलावो कभी न मांगे, उपकार उनपर छोड जावे ।।
इनकी किर्ती जगत में रहती, तबतक रहे चाँद सितारे ।। ३ ।।

जैरामदास कहे साधु का हाथ हरदम उँचा हो ।
जो जो मांगे वो वो देवे, कमतरता ना किसीको हो ।।
ऐसे ही साधु मुझको भाते, वोही प्राणीं से है प्यारे ।। ४ ।।

भजन क्र. १००

(तर्ज– जहाँ डाल डाल पर)

कई लोग बताते चतुराई, छोडे ना अपनी बुराई ।
दिलमें गन्दगी छाई ।।
ठिकाना नही ईमानदारी का, देवे वो अपनी भलाई ।। टेक ।।

ये मीठी मीठी बात बतावें, मनमें रखे काला ।
बनावट चेहरे के उपर, फंसावे हरदम भोला ।।
यें मुख से बोले रामनाम, करे काम ये कसाई ।। १ ।।

वो बिगर पेंदे के लोटें जैसे, इधर उधर वे लुढकते ।
वो जान बुझकर मतलब से, वे अनजाने है बनते ।।
तबले डग्गमे पर हाथ रखकर, कहते हांजी हांजी ।। २ ।।

वो काना फुंसी दैनिक धन्धा, इन्हे मजा आवे ।
वो रंग चढे जब इनके सरपर, बढी चढी बतावे ।।
वो सीना जोरी का व्यवहार करते, खोयें उमर सारी ।। ३ ।।

कहे जैरामदास ऐसे लोफरोंसे, समाज कीं होती हानी ।
इने बैमानों ने जहाँ वहां किये' है धुल धानी ।।
वो कडा सबक सिखाओं इन्हे, करने न पाये गद्दारी ।। ४ ।।

भजन क्र. १०१

(मेरी छोटीसी है नाव)

मेरे दुर्बुद्धी के भाव कैसे, लेऊ तेरो नाम, है भक्तीका अभाव
क्रोध बतावे, ताव रे ।। टेक ।।

हरदम करे मन ये सैतानी, अटपटी चलावे ये बानी ।
आशा तृष्णा करे जोर, काम मचावे अपना जोर ।।
मद मत्सर धन घोर ।। १ ।।

राहोमें अडंगे डाले कैसे धैर्य हम तो सम्भाले ।
चारो और है तुफान, जीव हो गया बेफाम ।।
मिले नही समाधान ।। २ ।।

भुली भ्रांति हरदम बहकाये, नैंया हरदम हिचखोले खाये।
मुझें कोई ना आधार, डुब रहा हुँ मजधार ॥
खिवय्या करो पार ॥ ३ ॥

कहता जैराम किस्ती पुरानी, नदीयां में है गहरा पानी।
दिखती मुझको हानी, बचाओ मुझको स्वामी ॥
बैया बढाओ घनश्याम ॥ ४ ॥

भजन क्र. १०२
(तर्ज– गुरुदेव तुम्हारे चरणो में)

गुरु नाम का हमने ध्यान किया, सब पाप हमारा छुट गया ॥ टेक ॥

सुमन के फुल चढा करके, बुद्धि को ये शुद्ध किया।
षड विकारों को दुर करके, हृदय मे आसन डाल दिया ॥
शील नम्रता के भाव धरे, हमने उनको स्थान दिया ॥ १ ॥

जो जो देखें दृष्टी से काम, ओ ओ समझे हम राम का धाम।
उसकी ही पूरती करने को, संकल्प किया हमने ही ठाम ॥
वह फर्ज निभाने के लिये, तन मन को निछावर किया ॥ २॥

सब जीव जगत आत्मा मानी, कल्यान के लिये दिल में ठानी।
सेवा की वृत्ति धर करके, हमने चलाई ब्रम्ह बानी ॥
हित देश धर्म समाज का नारा ही हमने नित गाया ॥ ३ ॥

मर मिटेंगे सत् वचनों पर, गुरुदेव का फर्ज निभाने को।
चाहे मुसिबतें कितनी आवे, काल का नहीं है हमको कुछ डर ॥
जैराम कहे लगन ऐसी, दिल में हमने ही ठान लिया ॥ ४ ॥

भजन क्र. १०३

[तर्ज– रमला कुठे ग कान्हा]

संसार सभी दुःख दाई,
सुखी यहाँ मिलेना कोई ।। टेक ।।

फिकीर को जलादिया भाई, फकीरी बिरले ने पाई।
वोह् बना सुख दाई ।। १ ।।

सत् संग की मजा लूटा, बंधन से वो हीं है छुटा।
रही न झंझट भाई ।। २ ।।

अपने ही धुन में रहता, निश दिन वो गुनगुनाता।
भक्ति उसी ने पाई ।। ३ ।।

लेना देना किसी का नहीं, प्रेम ना बैर कोई।
भजन वोही कमाई ।। ४ ।।

जैराम कहे दृढ विश्वास, जड देह् का भूला पास।
आनंद से उमर बिताई ।। ५ ।।

भजन क्र. १०४

(तर्ज– मन तडफत हरी दर्शन)

रंग जारे तू रसना, हरी के नाम में।
जैसे कपडा रंगाये रंगरियाँ ऽऽऽ ।। टेक ।।

अमृत रस पी मधुमक्खियाँ सम्।
तन जायें पर छोडे ना वो धुन ।।
लेले भक्ति की डगरियाँ ऽऽऽ ।। १ ।।

पल पल जियाँ डोलन लागे।
आत्म उमंगे ये बोलन लागे ।।
चढ जाये नशा देखते पिया ऽऽऽ ।। २ ।।

स्वाद लेते जा, स्वानुभव का ।
प्याला पिये जा, राम रस का ।।
जैराम कहे रमजा कन्हैया ऽऽऽ ।। ३ ।।

भजन क्र. १०५

(जहाँ डाल डाल पर सोने चिडियां करती है)

कई लोग पढते रामायण गीता, समझेना उसका इशारा ।
है ये सब ढोंग धतुरा २
दिखलावे दुनियां को दिखावा, शान में रहता तुला ।। टेक ।।

ये लम्बी लम्बी गाल बजावे, झूठी चले चाले ।
वो दिलमें तो है कटु भावना, मुख से रामनाम ना बोले ।।
वो सच्चाई की परखना करें, घुमे मन विषय विकारा ।। १ ।

वो धरम करम को जाने नही, व्यवहार करे वो गन्दा ।
वो पर जीवों कि दया न दिलमें, प्रभु कैसा होवे फिदा ।।
वो मांस मदिरा सेवन निस दीन, बडबडता भाट बिचारा ।। २ ।।

वो कहता जैरामदास, बिना समझे ना पढो पोथी ।
वो बिना अर्थ की व्यर्थ बातें, सुख कुछ है ये थोंथी
जितना समझे उतनाही बोले, वो होता जगको प्यारा ।। ३ ।।

भजन क्र. १०६

(तर्ज– मन तडफत हरी दर्शन)

ललचांये ये रसना, हरी गुण बिना ।
जैसे पति बिन, सिंगार सूना । टेक ।।

कितना भी धन दौलत होवे ।
उसमें कोई तथ्य ना पावे ।।
पुत्र बिना ये पिता सूना ।। १ ।।

ग्यान बिना इंसान सूना है ।
देव बिना मन्दिर सूना है ।।
त्याग बिना वैराग्य सूना ।.२ ।।

तडपे मछली जल के बिना ।
प्रकाश बिना अन्धा है सूना ।
अर्थ बिना ये पढना सूना ।। ३ ।।

जिस ज्ञान में राम नहीं है
सर बिन धड की शोभा नही है ।।
जैराम कहे गुरु भेद ना जाना ।।४ ।

भजन क्र. १०७
(बहुत दिन बीते)

भजन बिना, रसना सूनी है जैसे हरी के ।। टेक ।।

काया सुनी एक जीव बिना, जीव सुना एक ब्रम्ह बिना ।
ज्ञान सुना एक शांति बिना, शांती सुनी एक लक्ष बिना ।। १ ।।

भक्ती सुनी एक भाव बिना, भाव सुना एक श्रद्धा बिना ।
पोथी सुनी एक अर्थ बिना, दया सुनी एक क्षमा बिना ।। २ ।।

गीत सुना एक राग बिना, राग सुना एक शद्ब बिना ।
शद्ब सुना एक संत बिना, तीर्थ सुना एक भक्त बिना ।। ३ ।।

जैराम कहे एक नीति बिना, न्याय सुना एक सत्य बिना ।
सत्य सुना एक सज्जन बिना, सज्जन सुना एक सत्य बिना ।। ४ ।।

भजन क्र. १०८
(तंर्ज– अगर है ग्यान को पाना)

जगत कल्याण के लिए, बदन पर कष्ट झेला है ।
घिसे दिन रात तन इसका बेगुनाह कुचला जाता है ।। टेक ।।

न्याय उसको ना मिले दर दर खाये ठोकरे ।
नैंनो से पानी वो निकले, मुसिबत का वो घेरा है ॥ १ ॥

सज्जनता दिल मे धरके, भुला है अपना पराया ।
सभी को अपना मान लिया, वो ही पागल कहलाता है ॥ २ ॥

किसीका दु:ख सुन करके, जायें वो हरदम दौडके ।
दया की भावना धरके, बदनामी वो पाता है ॥ ३ ॥

कहे जैराम आई ऐसी नीती, झूठसे करते है प्रीति ।
हो रही यहाँ फजिती, काल ने धूम मचाई है ।, ४ ॥

भजन क्र. १०९

नोट- एक निठुले आदमी की कहानी

[तर्ज- हाय हाय ये मजबूरीं]

हाय हाय ये मजबूर, आदत से है बेजूर ।
ये दुनियाँ को तडपाये, तेरी दुविधा की ये बातें ॥
तेरा ईमान डूबा जाये ॥ टेक ॥

कितनी उमरियाँ खो दिये, कोई ना काम में लाये ।
बिना नाम के किये उजरियाँ, मोह माया की बतियाँ बतियाँ ॥
लाज शरम छोड दिये, घुमते हैं गलियाँ गलियाँ ॥ १ ॥

दिखे सुन्दर छबीला, शान शौकत में है तुला ।
जिन्दगी की फिकर ना किया, करे टालम टोला, टोला ॥
सीना फुलाकर चलता प्यारे, मन में फूला जायें ॥ २ ॥

खेती बाडी बाप की थी, शराब में सारी खोया ।
सट्टा जुवा तुझको भाया बट्टा ये लगगया लगगया ॥
जबतक भी पैसा कौडी, वो तबतक मौज मनाये ॥ ३ ॥

अब तुझपर बिपत्ती आई, माथा वो पीटता जाये ।
पिछले कर्म को देख देखकर, हाथमलकर रोये रोये ॥
जैराम कहे ये कर्म फल, बोया वो वैसा पाये ॥ ४ ॥

भजन क्र. ११०

(तर्ज– अवताराचे कार्य कराया)

गुरुकृपा कहीं खरीदी ना जाती, बाजार में ना वो मिलती है ।
पडी नही वो है सडकों पर, बिकती नही वो पैसों से ॥ टेक ॥

भाग्य जिसके खुल जाते है पूर्व जन्म के कर्मों सें ।
उनको ही मिलती गुरुकीं दुआ, उनवचनो पर, चलनेसे ॥ १ ॥

कठिन भक्ति है सेवा वृत्ती की, चलने की और निभाने की ।
महक उठती है खुशबू उनकी, चन्दन जैसे घिसने से ॥ २ ॥

तत्व तत्व में मिलाते रहो, भाव रुपी विचारों को ।
आत्मा आत्मा से प्रीत जुडेगी, नित्य निरन्तर प्रयत्न से ॥ ३ ॥

चरित्रवान और शुद्ध वृत्ति हों, श्रद्धा भाव हो कर्मो में ।
दया भावना दिलमें जगी हो, शील नम्रता धरने से ॥ ४ ॥

पत्थर पर बीज बोया न जाता, दीप ना जलता तेल बिना ।
नारी पुरुष बिन पुत्र ना होवे, पेट ना भरे बिन खाने से ॥ ५ ॥

जैरामदास कहे सुनलो बाबा, पात्रता हो सत गुणों की ।
तेरा मेरा मिटे न जबतक, क्या होगा कान फुंकने से ॥ ६ ॥

★ आरती ★

(तर्ज– आरती करीए सियावर की)

आरती दिनदयालू की, सच्चिदानंद सद्‌गूरु की।
लिये अवतार जन कल्याण, मिटाने असूरों का अभिमान।
रखेंन भक्तों की ये शान, रात दिन होतें है हैरान।
सिखाने सार, सत्य का ज्ञान, लेतें अवतार।
राह् बतलाते भक्तिकी ॥ १ ॥ आरती

रात दिन देह् झिजाते है दिलासा दु:खियों को देते है।
धर्म की राह् बताते है, जीवन सुखी बनाते हैं।
ऐंसे उद्धार, पावे ना पार मिटे भूभार।
वानी ना चलती वेदो की ॥ २ ॥ आरती

काल भी डरता नाम लेते, पापी भी सतसंत से तरते
भव बंधन से छूट जाते, जो भी शरण उनकी लेते।
रखें दृढभाव पूर्णं सब काज, भक्तों की लाज।
ऐसी महिमा है संतनकी ॥ ३ ॥ आरती

कोई ना जान सका है अंत, जिनकी सीमा है अनंत।
पामर क्या जानुं ये पंथ, थके है शेष शारदा ग्रंथ।
कहे जैराम, भूलो ना नाम, जपो हरी नाम।
आशा है, यही एक पामरकी ॥ ४ ॥ आरती

भागवत प्रिन्टींग प्रेस, भिवापूर